

स्वच्छता से ही संपन्नता की ओर

“पृथ्वी मैया सबको प्यारी

कौन सुनेगा बात हमारी

कौन सुनेगा बात हमारी”

(भीड़ से कुछ लोग निकल कर बोलते हैं)

हम सुनेंगे, हम सुनेंगे, हम सुनेंगे, हम सुनेंगे बात तुम्हारी (तेजी से सब एक साथ बोलते हैं)

बोलो क्या कहना है तुमको? (भीड़ से जो लोग निकल कर आए थे)

वक्त नहीं हमारे पास

जाना हमको जमुना पार

तो तुम क्यों आए मेरे पास

वाणी प्रफुल्लित चेहरे पर इतना हर्षोल्लास।

(प्रथम व्यक्ति)

ठीक है कहो क्या कहते हो हम सुनेंगे तुम्हारी बात तो सुनो तुम लोग

क्या पृथ्वी नहीं देती हमको जीवन और विश्वास

(सारे एक साथ बोलते हैं) देती है

तो तुम इसको क्यों कहते हो गंदा ?

हम गंदा कहाँ करते हैं, हम तो बस खाकर इधर-उधर फेंक देते हैं

यह क्या है? इसे गंदगी नहीं कहेंगे?

भाई इसे ही डेमोक्रेसी कहेंगे।

क्या कहेंगे डेमोक्रेसी (मजाक के लहजे में)

मतलब

मतलब ये कि हमारे चाचा चाचा नेहरू ने हमें संविधान द्वारा डेमोक्रेसी दी है हम खुद भी कर सकते हैं क्यों भाई जान हमें फ्रीडम मिली है फ्रीडम

अच्छा डेमोक्रेसी है

(पाठ पढ़ाया आदमी नंबर 3 को जिसने डेमोक्रेसी का पाठ पढ़ाया नोट या उसे एक झापड़ खींच कर देता है सब लोग हंसते हैं)

यह क्या किया भाई मारा क्यों?

भाई डेमोक्रेसी है तो कुछ भी कर सकते हैं

डेमोक्रेसी में बिना मतलब के क्या किसी को भी मार सकते हैं?

तो क्या डेमोक्रेसी में लोग ही इधर-उधर कूड़ा फैला सकते हैं क्या?

(सर झुका कर बोलता है) माफ कीजिएगा भाई

(सब मिलकर) गलत है गलत है यह तो गलत है अब नहीं करेंगे यह सब हम सब भी रहेंगे अब स्वच्छ

“आओ आओ नुक्कड़ देखो EPS

कि हम नुक्कड़ बाज नुक्कड़ लाए नुक्कड़ देखो

धिन चेक धिन चेक धिन चेक धिन धा

अरे ये क्या? यहां तो कितना प्रदूषण है ?

अरे प्रदूषण कहाँ है यह तो निर्मल हवा है ये धुआँ तो फैक्ट्री से निकलता है यह धुआँ तो तरक्की की निशानी है

भाई साहब इन फैक्ट्रियों से गंदा पानी सीधे नदी में जा रहा है इससे नदी का पानी गंदा हो रहा है।

भाई फैक्ट्रियाँ है तो गंदा पानी निकलेगा ही और नदी में जाएगा ही

क्यों फैक्ट्रियों में वॉटर रीसाइक्लिंग से पानी स्वच्छ किया जा सकता है उनके बाद नदियों में छोड़ा जा सकता है

अरे इससे पैसे की बर्बादी होगी और देश की तरक्की रुक जाएगी

अरे बेवकूफ तरक्की रुकेगी नहीं पानी स्वच्छ रहेगा तो लोग पशु पक्षी कोई भी बीमार नहीं होगा

यह सब बकवास है

अरे नासमझ आदमी जिंदगी में तो कुछ नहीं किया कोई कुछ बात समझ रहा है तो सुनो (नंबर 4 को समझाते हुए) बोलो बाबू जी क्या कह रहे हो आप

पर्यावरण को हम जितना स्वच्छ रखेंगे ना ही सब को फायदा है:

हवा स्वच्छ रहेगी

पानी स्वच्छ होगा

कोई बीमार नहीं पड़ेगा

सब खुश रहेंगे

चारों ओर खुशियां ली होगी

सबके चेहरे पर नई चमक होगी

(सब मिलकर बोलते हैं)

संभल जाओ ए धरा वालो

वसुंधरा पर करो ना धातक प्रहार तुम

रब करता आगा हर पल

प्रकृति पर ना करो घोर अत्याचार तुम

लुप्त हुए अब झील और झरने

वन्यजीवों को मिला मुकाम नहीं

मिट रहा खुद जीवन के अवयव

धरा पर बचा जीव का आधार नहीं

तबाह हो रहा सब कुछ निश दिन

आनंद के अलावा कुछ याद नहीं

नित नए साधन की खोज में

स्वच्छता और संपदा का किसी को ध्यान नहीं ।